INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | JULY – 2024

पंडित जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. रीता बाजपेयी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान विभाग (इतिहास),
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश –

पं जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे। स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् भारतीय राजनीति के केन्द्रीय व्यक्तित्व के धनी थे। गाधीजी के संरक्षण में ये भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सर्वाने के रूप में उभरे और उन्होंने 1947 में भारत के एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1964 तक अपने निधन तक भारत का शासन किया।

शब्द कुंजी – पंचवर्षीय, राष्ट्र, प्रजातांत्रिक, प्रौद्योगिकी, लोकतान्त्रिक, गणतन्त्र, वास्तुकार।

प्रस्तावना–

आजादी के महानायकओं में एक से पंडित जवाहरलाल नेहरू आजाद भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बने समाजवादी धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के वास्तुशिल्पी में भारत की जाति तथा धार्मिक भिन्न नेताओं के बावजूद देश की मौलिक एकता पर जोर देने के साथ साथ नेहरू जी न भारत को तकनीकी विकास वैज्ञानि प्रति भी सी अच्छी प्रौद्योगिकी विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का शुभारंभ किया उनकी नीतियों के कारण देश में कृषि और उद्योग का एक नया युग प्रारंभ हुआ इस योजना का मुख्य उद्देश्य यही था कि देश में गरीबी को मिटाना है और लागों के लिए रोजगार के अवसर लाना है साथ ही साथ सभी को आत्मनिर्भर बनाना है देश का आर्थिक विकास करना 26 सितंबर को प्रेस में जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति की रूपरेखा प्रस्तुत की थी जिसमें उन्होंने स्वतंत्र भारत अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक स्वतंत्र नीति का अमन किया और किसी भी गुट में शामिल नहीं हुआ था। यूरोपियन गुट एवं साम्यवादी सोवियत राम गुट में शामिल नहीं होना संसार के किसी भी भाग के उपनिवेशवाद और भेदभाव का विरोध करेगा और विश्व शांति के साथ हमेशा अपना समर्थन देगा और अपने समर्थक देशो के साथ भारत सहयोग करेगा। पंडित नेहरू ने देश को आवाहन करते हुए कहा 'आराम हराम है इस प्रकार पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आधुनिक भारत के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाई थी। पं जवाहरलाल नेहरू नवम्बर 14. 1889 से मई 27. 1964 तक भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री मे स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात भारतीय राजनीति के केन्द्रीय व्यक्तित्व में महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय आन्दोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और उन्होंने 1947 में भारत के एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1964 तक अपने निधन तक भारत का शासन किया। ये आधुनिक भारतीय राष्ट्र राज्य दु एक सम्प्रभु समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतान्त्रिक गणतन्त्र के वास्तुकार माने जाते हैं। कश्मीरी पण्डित समुदाय के साथ उनके मूल की वजह से ये परित नेहरू भी बुलाए जाते थे, जबकि भारतीय बच्चे उन्हें चाचा नेहरू के रूप में

जानते हैं स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री का पद संभालने के लिए कांग्रेस द्वारा नेहरू निर्वाचित हुए यद्यपि नेतृत्व का प्रश्न बहुत पहले 1941 में ही सुन कर या जब गांधीजी ने नेहरू को उनके राजनीतिक वारित और उत्तराधिकारी के रूप में अभिस्वीकार किया। प्रधानमन्त्री के रूप में ये भारत के सपने को साकार करने के लिए चल पड़े।

विषयवस्तु –

भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ, जिसके बाद उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के एक महत्त्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की। मुख्यतः एक बहुत बहुदलीय लोकतन्त्र को पोषित करते हुए उन्होंने भारत के एक उपनिवेश से गणराज्य में परिवर्तन होने का पर्यवेक्षण किया। विदेश नीति में, भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रदर्शित कर निरपेक्ष आन्दोलन में एक आणी भूमिका निभाई। पं जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय चुनावों में प्रभुत्य दिखाते हुए और 1951 1957 और 1962 के लगातार चुनाव जीतते हुए एक सर्व–ग्रहण पार्टी के रूप में उभरी। उनके अन्तिम वर्षो में राजनीतिक सकटों और 1962 के चीनी भारत युद्ध में उनके नेतृत्व की असफलता के बाद भी वे भारत में लोगों के बीच लोकप्रिय बने रहे। भारत में उनका जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। जवाहरलाल नेहरू ने दुनिया के कुछ बेहतरीन स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हैरो से और कॉलेज की शिक्षा ट्रिनिटी कलिज, कैम्ब्रिज (लंदन) से पूरी की थी। इसके बाद उन्होंने अपनी लों को डिग्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पूरी की। इंग्लैंड में उन्होंने सात साल व्यतीत किए जिसमें वहां के फैबियन समाजवाद और आयरिश राष्ट्रवाद के लिए एक तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित किया।

पं जवाहरलाल नेहरू 1912 में भारत लौटे और वकालत शुरू की। 1915 में उनकी शादी कमला नेहरू से हुई। 1917 में जवाहर लाल नेहरू होम रूल लीग में शामिल हो गए। राजनीति में उनकी असली दीक्षा दो साल बाद 1919 में हुई जब वे महात्मा गांधी के संपर्क में आए। उस समय महात्मा गांधी ने रौलेट अधिनियम के खिलाफ एक अभियान शुरू किया था। पं नेहरू, महात्मा गांधी के सक्रिय लेकिन शातिपूर्ण, सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति खासे आकर्षित हुए। मागधी के उपदेशों के अनुसार अपने परिवार को भी दाल लिया। पं जवाहरलाल और नेहरू में पश्चिमी कपड़ों और महंगी संपत्ति का त्याग कर दिया। में अब एक खादी कुर्ता और गांधी टोपी पहनन जवाहर लाल नेहरू ने 1920–1922 में असहयोग आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लिया और इस दौरान पहली बार गिरफ्ता किए गए। कुछ महीनों के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।।

सहयोग की कमी का हवाला देकर ये जवाहरलाल नेहरू 1924 में इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष चुने गए और उन्होंने शहर के मुख्य कार्यका अधिकारी के रूप में दो वर्ष तक सेवा की। 1926 में उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों त्यागपत्र दे दिया। 1926 से 1928 तक, जवाहर लाल नेहरू ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव के रूप में सेवा की। 1928–29 में कांग्रेस के वार्षिक सत्र का आयोजन मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में किया गया। उस सत्र में जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस ने पूरी राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग का समर्थन किया, जबकि मोतीलाल नेहरू और अन्य नेताओं ने ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर ही प्रभुत्य सम्पन्न राज्य का दर्जा पाने की मांग का समर्थन किया। मुद्दे को हल करने के लिए गांधी ने बीच का रास्ता निकाला और कहा कि ब्रिटेन को भारत के राज्य का दर्जा देने के लिए दो साल का समय दिया जाएगा और यदि ऐसा नहीं हुआ तो काग्रेस पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए एक राष्ट्रीय संघर्ष शुरू करेगी। नेहरू और बोस ने मांग की कि इस समय को कम कर क एक साल कर दिया जाए। ब्रिटिश सरकार में इसका कोई जवाब नहीं दिया।

दिसम्बर 1929 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित किया गया जिसमें प जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष चुने गए। इसी सत्र के दौरान एक प्रस्ताव भी पारित किया गया जिसमे पूर्ण स्वराज्य की मांग की गई। 26 जनवरी 1930 को लाहौर में जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का झंडा फहराया। गांधी जी ने भी 1900 में सविनय अवज्ञा आंदोलन का आह्वान किया। आदोलन खासा सफल रहा और इसने ब्रिटिश सरकार को प्रमुख राजनीतिक सुधारों की आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। जब ब्रिटिश सरकार ने भारत अधिनियम 1935 प्रख्यापित किया तब कांग्रेस पार्टी ने चुनाव लड़ने का फैसला किया। नेहरू चुनाव के बाहर रहे लेकिन जोरों के साथ पार्टी के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया।

कांग्रेस ने लगभग हर प्रांत में सरकारों का गठन किया और केन्द्रीय असेंबली में सबसे ज्यादा सीटों पर जीत हासिल की।

नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए 1936 और 1937 में चुने गए थे। उन्हें 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार भी किया गया और 1945 में छोड़ दिया गया। 1947 में भारत और पाकिस्तान की आजादी के समय उन्होंने ब्रिटिश सरकार के साथ हुई वार्ताओं में महत्त्वपूर्ण भागीदारी की नेहरु ने भारत की विदेश नीति को एक ऐसे अवसर के रूप में देखा जिसमे वे अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सके उनकी विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा था उनका पंचशील का सिद्धांत जिसमें राष्ट्रीय संप्रभुता राष्ट्र के मामलों में दखल न देने जैसे पाँच महत्वपूर्ण शांति सिद्धांत शामिल थे।

पंडित जवाहर लाल नेहरू का पंचशील सिद्धांत–

मानव कल्याण तथा विश्वशांति के आदर्शों की स्थापना के लिए विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था वाले देशों में पारस्परिक सहयोग के पाँच आधारभूत सिद्धांत, जिन्हें पंचसूत्र अथवा पंचशील कहते हैं। इसके अंतर्गत ये पाँच सिद्धांत निहित है–

(1) एक दूसरे की प्रादेशिक अखंडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना
(2) अंतरराष्ट्रीय मामले में एक दुसरे का सहयोग करना
(3) एक दूसरे के आंतरिक विषयों में हस्तक्षेप न करना
(4) समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करना तथा
(5) शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति में विश्वास रखना।

उपसंहार –

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में वह चाहते थे कि भारत दोनों महाशक्तियों में से किसी के भी दबाव में न रहे और भारत की अपनी एक स्वतंत्र आवाज और पहचान हो. उन्होंने मुद्दों के आधार पर किसी भी महाशक्ति की आलोचना करने का उदारहण भी रखा यह महत्वपूर्ण था क्योंकि तब तक दुनिया के बहुत से देशों को भारत की आजादी पर भरोसा नहीं था और वे सोचते थे कि यह कोई ब्रितानी चाल है और भारत पर असली नियंत्रण तो ब्रिटेन का ही रहेगा नेहरू के बयानों और वक्तव्यों ने उन देशों को विश्वास दिलाया कि भारत वास्तव में स्वतंत्र राष्ट्र है और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी एक राय रखता है. नेहरु की विदेश नीति में दूसरा महत्वपूर्ण बिंदू गुट निरपेक्षता का था. भारत ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह दो महाशक्तियों के बीच झगड़े में नहीं पड़ना चाहता और स्वतंत्र रहना चाहता है. हालांकि इस सिद्धांत पर नेहरू ने 50 दशक के शुरुआत में ही अमल शुरू कर दिया था लेकिन "गुट निरपेक्षता शब्द उनके राजनीतिक जीवन के बाद के हिस्से में 1961 के करीब सामने आया। कमजोरियाँ जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति की दो बड़ी कमजोरियाँ एक तो यह नीतिपर आधारित थी इसलिए पश्चिमी देशों को बहुत बार जननीतियों के नैतिक प्रकार की तरह लगती थी इसकी वजह से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को मित्र नहीं मिल रहे थे और कोई भी भारत से सीधी तरह से जुड़ नहीं रहा था। दूसरी कमजोरी यह थी कि सिद्धांतों पर आधारित होने के कारण इस नीति का संबंध राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास के साथ सीधी तरह नहीं जुटा था इसके कारण यह विदेश नीति भारत की जनता के आर्थिक विकास में कोई योगदान नहीं दे सकी। उदाहरण के लिए भारत में उन दिनों कोई विदेशी निवेश नहीं हुआ और 1962 में चीन से मिली पराजय से जाहिर हो गया कि सुरक्षा के मामले में भारत तैयार नहीं था आज की नीति पर प्रभाव नेहरू की नीति की सबसे खूबी थी आत्म–सम्मान की रक्षा।

सन्दर्भ सूची –

1. भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस –पद– मूल से 5 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 जनवरी 2017.
2. Nation pays tribute to Pandit Jawaharlal Nehru on his 124th birth anniversary मूल से 1 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 फरवरी 2015.
3. हमारी विरासत, डॉ० राधाकृष्णन, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा०लि०, दिल्ली संस्करण 1089.
4. Zakaria, Rafiq, A Study of Nehru½ Times of India Press,1960

5. Bonnie G-Smith, The Oxford Encyclopaedia of Women in World History - Oxford University Press,2008
6. श्याम बेनेगल निर्मित इस धारावाहिक के बारे में प्रगतिशील वसुधा के सुप्रसिद्ध सिनेमा विशेषांक में कहा गया है कि भारत एक खोज (1988) धारावाहिक टेलीविजन पर एक ऐसी कृति के रूप में सामने आया जिसका आज बीस साल बाद भी कोई मुकाबला नहीं है। द्रष्टव्य– हिंदी सिनेमा बीराची से इक्कीसवी सदी तक (प्रगतिशील वसुधा का सिनेमा विशेषांक, अंक–01 अप्रैल–जून, 2009), अतिथि संपादक– प्रहलाद अग्रवाल, पुस्तक रूप में साहित्य भंडार 50 चाहचंद रोड इलाहाबाद से प्रकाशित।
7. हमारी विरासत, डॉ० राधाकृष्णन हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० ति०, दिल्ली, संस्करण–19891 जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय, खड–इ सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण 1976।

डॉ. रीता बाजपेयी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान विभाग (इतिहास),
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)